ASTROICA.COM

Jupiter Transit Report

KAREN LAURET

February 17, 2000, 10:00 AM

Chennai

ॐ अंगि-रसाय विद्महे
दण्डायुधाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात् ॥

जन्म विवरण

नाम	KAREN LAURET
जन्म तिथि	17 February, 2000
जन्म का समय	10:00 am
जन्म तारीख	गुरुवार
दिन/रात	दिन
जन्म स्थान	Chennai
अक्षांश एवं देशांतर	9.93988, 76.2602
समय क्षेत्र सुधार	स्टैण्डर्ड टाइम (+05:30)
अयनांश	लाहिड़ी
जेंडर (लिंग)	पुरुष

वर्ष 2000, 17 फरवरी, गुरुवार को उत्तरायण के समय, सूर्योदय के पश्चात 10:00 AM बजे 8 घटी (नाझिका) और 1 विघटी (विनाझिका) पर, त्रयोदशी तिथि, कौलव करण, आयुष्मान नित्य योग, पुनर्वसु नक्षत्र के चौथे पद में, मीन लग्न, कुम्भ सूर्य राशि और कर्क चन्द्र राशि में इस लड़का का जन्म हुआ।

नक्षत्र	चंद्र राशि	सूर्य राशि
पुनर्वसु	कर्क	कुम्भ
पद : 4	कैंसर	एक्वेरियस

पंचांग का विवरण

नीचे दी गई तालिका KAREN LAURET के जन्म समय के पंचांग विवरण को दर्शाती है।

तिथि (चंद्र दिवस)	त्रयोदशी
नक्षत्र	पुनर्वसु (4/4)
नक्षत्र प्रभु	गुरू
योग	आयुष्मान
करण	कौलव
चंद्र राशि	कर्क
चंद्र राशि स्वामी	चंद्र
सूर्य राशि	कुम्भ
सूर्य राशि स्वामी	शनि
राशि चक्र चिन्ह (पश्चिमी प्रणाली)	एक्वेरियस
आयन	उत्तरायण
ऋतु	शिशिर
हिंदू माह (अमांत)	माघ
सूर्योदय	06:47 am
सूर्यास्त	06:30 pm
चंद्रोदय	04:23 pm
चंद्रास्त	05:22 am

नक्षत्र, राशि, और अन्य विवरण	
लग्न राशि	मीन
नवमांश	मीन
योग कारक	गुरू
आत्म कारक	लग्न
अमात्य कारक	बुध
लग्न आरूढ़	वृषभ
धन आरूढ़	मिथुन
चंद्र-अवस्था	10/12
चन्द्र-वेला	28/36
चन्द्र-क्रिया	47/60
दग्ध राशि	वृषभ और मीन
देवता	अदिति (देवों कि माता)
गण	देव गण
चिह्न	धनुष और तरकश
पशु चिन्ह	बिल्ली
नाड़ी	वात
रंग	सीसा
सर्वोत्तम दिशा	उत्तर
शब्दांश	Ke, Ko, Ha, Hi
जन्म रत्न	पुष्यराग (पुखराज)
योनि	स्त्री
शत्रु	चूहा
वृक्ष	बांस
भूत	जल
गोत्र	क्रतु

आपकी कुंडली

नीचे उत्तर भारतीय शैली में KAREN LAURET के लिए लग्न, नवमांश और चंद्रमा चार्ट दिए गए हैं।

लग्न चार्ट

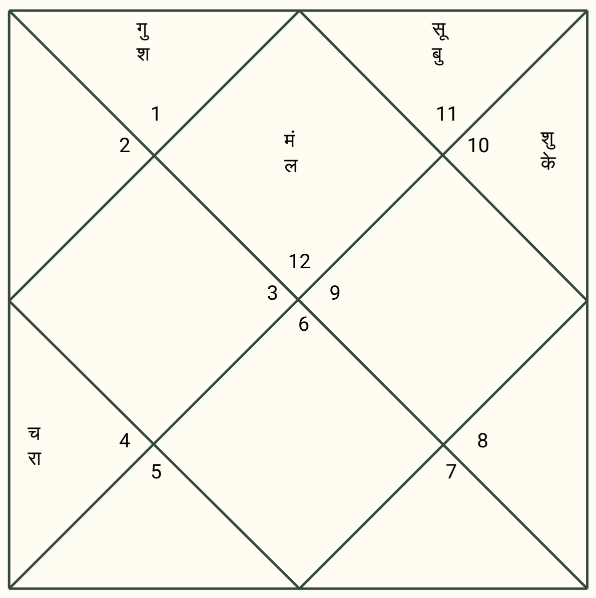

नवमांश चार्ट

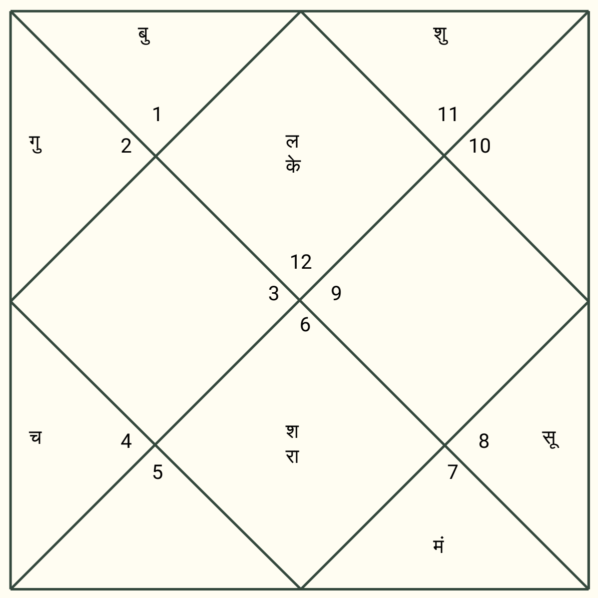

चंद्र चार्ट

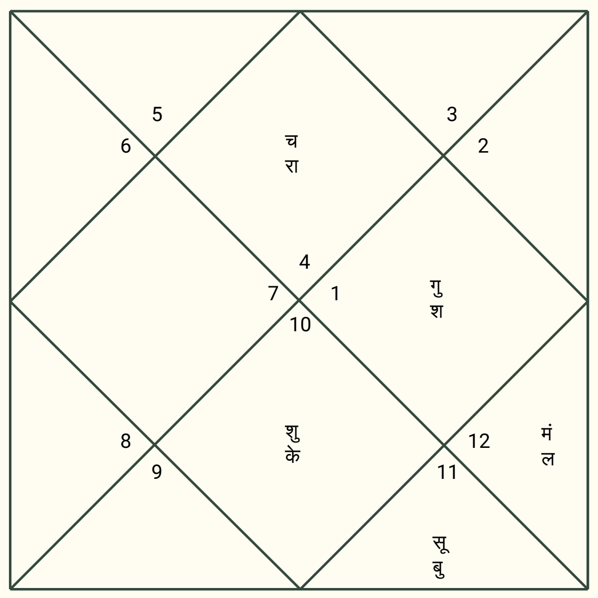

वेदिक ग्रह स्थिति (साइडरियल)

वैदिक ज्योतिष में, ग्रहों की स्थिति का निर्धारण निरयन रेखांश पर निर्भर करता है, जहाँ "निर-अयन" का अर्थ है कोई गति नहीं। यहाँ, अयनांश, गतिमान वसंत विषुव और सटीक नक्षत्र शून्य मेष बिंदु के बीच सटीक डिग्री अंतर, पश्चिमी ज्योतिष में उपयोग किए जाने वाले सायन रेखांश से घटाया जाता है। अयनांश की गणना के लिए उपयोग की जाने वाली विभिन्न प्रथाओं में से, यहाँ उपयोग की जाने वाली विधि चित्रपक्ष है।

चित्रपक्ष लाहिड़ी : 23° 51‘ 31“

नीचे दी गई तालिका दर्ज की गई तिथि, समय, और स्थान पर ग्रहों की स्थिति दर्शाती है (ग्रहों की निरयण देशांतर)

ग्रह	स्थान	डिग्री	राशि	प्रभु	नक्षत्र	प्रभु
रवि	303° 57‘ 11“	3° 57‘ 11“	कुम्भ	शनि	स्वाति	मंगल
चंद्र	90° 14‘ 55“	0° 14‘ 55“	कर्क	चंद्र	धनिष्ठा	गुरू
बुध	321° 44‘ 57“	21° 44‘ 57“	कुम्भ	शनि	उत्तरभाद्रपदा	गुरू
शुक्र	274° 53‘ 45“	4° 53‘ 45“	मकर	शनि	शतभिषा	रवि
मंगल	340° 3‘ 24“	10° 3‘ 24“	मीन	गुरू	उत्तर फाल्गुनी	शनि
गुरू	6° 31‘ 6“	6° 31‘ 6“	मेष	मंगल	अनुराधा	केतु
शनि	17° 36‘ 39“	17° 36‘ 39“	मेष	मंगल	आद्रा	शुक्र
लग्न	359° 45‘ 16“	29° 45‘ 16“	मीन	गुरू	विशाखा	बुध
राहु ℞	98° 42‘ 34“	8° 42‘ 34“	कर्क	चंद्र	हस्त	शनि
केतु ℞	278° 42‘ 34“	8° 42‘ 34“	मकर	शनि	शतभिषा	रवि

℞ वक्री को दर्शाता है

नीचे दी गई तालिका राशि चक्र में ग्रहों की स्थिति को उनके पश्चिमी नामों के साथ दर्शाती है।

ग्रह	स्थान	डिग्री	राशि	प्रभु	नक्षत्र	प्रभु
सूर्य	303° 57′ 11“	3° 57′ 11“	एक्वेरियस	शनि	स्वाति	मंगल
चंद्र	90° 14′ 55“	0° 14′ 55“	कैंसर	चंद्र	धनिष्ठा	गुरू
बुध	321° 44′ 57“	21° 44′ 57“	एक्वेरियस	शनि	उत्तरभाद्रपदा	गुरू
शुक्र	274° 53′ 45“	4° 53′ 45“	कैप्रिकॉर्न	शनि	शतभिषा	सूर्य
मंगल	340° 3′ 24“	10° 3′ 24“	पाइसीज़	गुरू	उत्तर फाल्गुनी	शनि
गुरू	6° 31′ 6“	6° 31′ 6“	एरीज़	मंगल	अनुराधा	केतु
शनि	17° 36′ 39“	17° 36′ 39“	एरीज़	मंगल	आद्रा	शुक्र
लग्न	359° 45′ 16“	29° 45′ 16“	पाइसीज़	गुरू	विशाखा	बुध
राहु ℞	98° 42′ 34“	8° 42′ 34“	कैंसर	चंद्र	हस्त	शनि
केतु ℞	278° 42′ 34“	8° 42′ 34“	कैप्रिकॉर्न	शनि	शतभिषा	सूर्य

℞ वक्री को दर्शाता है

विंशोत्तरी दशा

वैदिक ज्योतिष के अनुसार विंसोत्तरी दशा सबसे महत्वपूर्ण और सर्वोच्च दशा है। 120 वर्षों की अवधि में 9 दशाएँ विभाजित हैं। प्रत्येक दशा का एक शासक ग्रह होता है और किसी व्यक्ति का जीवन सीधे तौर पर उस विशेष दशा को नियंत्रित करने वाले उसके शासक ग्रह की प्रकृति से प्रभावित होता है। पहली महादशा किसी दिए गए नक्षत्र में जन्म के चंद्रमा की स्थिति से निर्धारित होती है।

जन्म समय से शेष बचा हुआ दशा काल : 3 years, 8 months and 13 days

नीचे विभिन्न महादशाओं का प्रारंभ समय और समाप्ति समय दिया गया है

प्रभु	शुरुआत	समापन
गुरू	31-Oct, 1987	31-Oct, 2003
शनि	31-Oct, 2003	30-Oct, 2022
बुध	30-Oct, 2022	31-Oct, 2039
केतु	31-Oct, 2039	30-Oct, 2046
शुक्र	30-Oct, 2046	30-Oct, 2066
सूर्य	30-Oct, 2066	30-Oct, 2072
चंद्र	30-Oct, 2072	30-Oct, 2082
मंगल	30-Oct, 2082	30-Oct, 2089
राहु	30-Oct, 2089	01-Nov, 2107

गुरू भिन्नाष्टकवर्ग

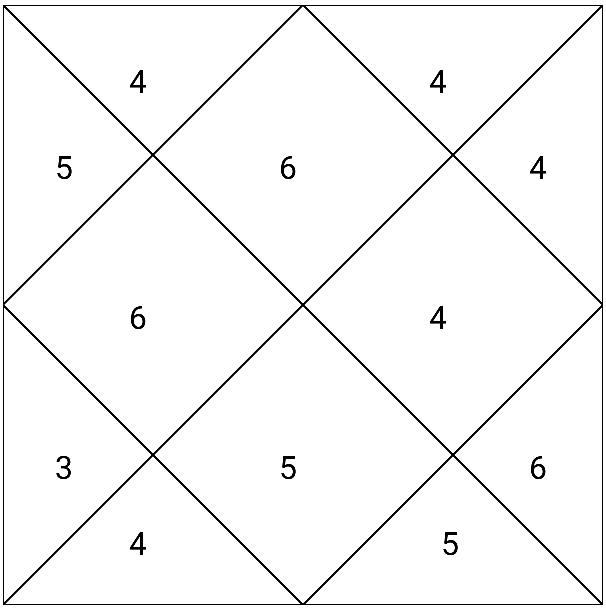

अंक: 56

	सूर्य	चंद्र	बुध	शुक्र	मंगल	गुरू	शनि	लग्न	प्राप्तांक
मीन	1	1	1	0	1	0	1	1	6
मेष	1	0	0	0	1	1	0	1	10
वृषभ	1	1	1	1	0	1	0	0	15
मिथुन	0	0	1	1	1	1	1	1	21
कर्क	0	0	1	0	0	1	0	1	24
सिंह	1	1	0	0	0	0	1	1	28
कन्या	1	0	0	1	1	0	1	1	33
तुला	1	0	1	1	1	1	0	0	38
वृश्चिक	1	1	1	1	0	1	0	1	44
धनुष	1	0	1	0	1	0	0	1	48
मकर	0	1	0	0	1	1	0	1	52
कुम्भ	1	0	1	1	0	1	0	0	56
प्राप्तांक	9	5	8	6	7	8	4	9	56

सर्वाष्टकवर्ग चार्ट

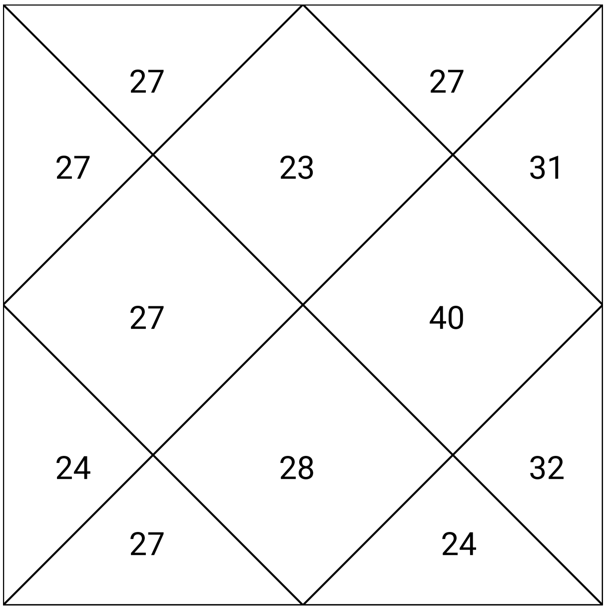

अंक: 337

	सूर्य	चंद्र	बुध	शुक्र	मंगल	गुरू	शनि	प्राप्तांक
मेष	4	6	6	3	4	4	0	27
वृषभ	4	5	3	4	2	5	4	27
मिथुन	4	2	4	4	4	6	3	27
कर्क	3	5	3	5	3	3	2	24
सिंह	3	5	3	5	2	4	5	27
कन्या	4	5	3	3	3	5	5	28
तुला	4	2	6	4	2	5	1	24
वृश्चिक	4	5	5	6	3	6	3	32
धनुष	8	5	6	4	7	4	6	40
मकर	4	4	6	6	4	4	3	31
कुम्भ	4	3	5	5	2	4	4	27
मीन	2	2	4	3	3	6	3	23
कुल	48	49	54	52	39	56	39	337

आपकी जन्म कुंडली में गुरू का विश्लेषण

गुरु या देवगुरु के रूप में जाने जाने वाला बृहस्पति, ज्योतिष में ज्ञान, शिक्षा और विवेक के संबंध में एक पवित्र स्थान रखता है। नवग्रहों में, गुरु को सबसे शुभ ग्रह माना जाता है। 'बृहत् पराशर होरा शास्त्र' के अनुसार, गुरु का दिव्य समकक्ष देवराज इंद्र हैं, देवताओं के राजा। गुरु को पुरुष प्रभाव का माना जाता है, जो पंचभूतों में वायु तत्व पर आधारित है। गुरु को ब्राह्मणिक गुणों के प्रतीक के रूप में माना जाता है, जो शुद्धता और ज्ञान का प्रतीक है। सात्विक गुण के साथ संरेखित, बृहस्पति को उसके पुण्य स्वभाव की विशेषता से जाना जाता है।

गुरु के संबंधों में, सूर्य, चंद्रमा और मंगल मित्रता का रिश्ता दर्शाते है। इसके विपरीत, बुध और शुक्र को गुरु के शत्रु माना जाता है, जबकि शनि के प्रति तटस्थ दृष्टिकोण बनाए रखते हैं।

गुरु धनु और मीन राशियों पर शासन करते हैं, जबकि गुरु का सर्वोच्च बल कर्क राशि में उच्च स्थिति में होता है, लेकिन मकर में नीच अवस्था में कमजोर होता है। किसी व्यक्ति की ज्योतिषीय कुंडली में एक मजबूत बृहस्पति उन्हें ज्ञान, बुद्धि और शिक्षा के क्षेत्रों में योग्यता प्राप्त करने की प्रवृत्ति देता है। इसके विपरीत, कमजोर गुरु से ये क्षेत्रों में प्रयासों में बाधा हो सकती है, जिससे उनकी ज्ञान से संबंधित क्षमताओं में उनकी सफलता पर प्रभाव पड़ सकता है।

आपकी जन्म कुंडली में, गुरू लग्न से 2nd भाव में, चन्द्रमा से 10th भाव में,, दुर्बल में, में, मेष में, अनुराधा नक्षत्र के दूसरे पद में, और गुरू क्रमशः भाव में को देख रहा है तथा क्रमशः

बृहस्पति दूसरे भाव में

जब बृहस्पति द्वितीय भाव पर कृपा करता है, यह जातक के लिए अनेकों शुभ अनुभव और लक्षण लेकर आता है। इन जातकों पर वाकपटुता, अपने आप को प्रदर्शित करने की आकर्षक क्षमता की कृपा होती है। इनकी भौतिक उपस्तिथि विशेष रूप से प्रिय, इनके ऊर्जावान स्वभाव को पूरक करती है। प्रखर बुद्धि के धनी, दयालु स्वभाव रखने वाले और बढ़िया भोजन को परखने वाले होते है, अक्सर पूजा पाठ में गहन रुचि दिखाते है।

गुरू गोचर

२०२५ में, बृहस्पति दो राशियों से गोचर करेगा: मिथुन राशि और कर्क राशि। इन गोचरों के लिए तालिका, अवधि और भविष्यवाणियाँ नीचे दी गई हैं।

बृहस्पति मिथुन राशि में।

गोचर चार्ट

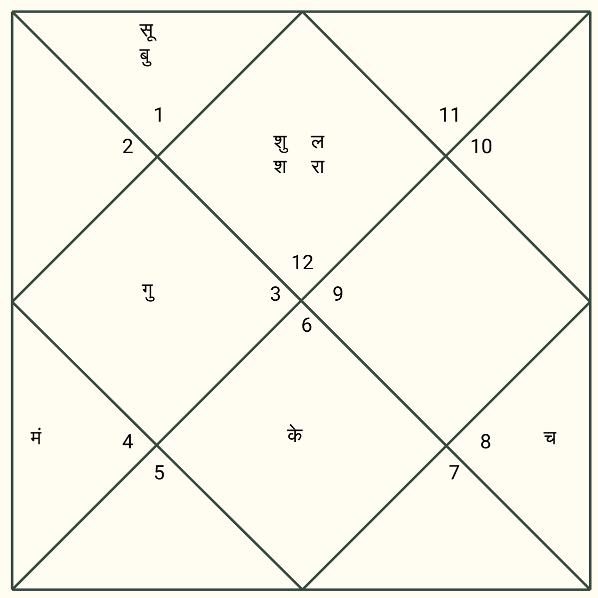

गुरू May 14, 2025 से October 18, 2025 तक मिथुन राशि में गोचर कर रहा है। यह गोचर आपकी जन्म राशि कर्क से गिने जाने वाले बारहवे भाव से होकर गुजरेगा। गुरू आपके लिए रजत मूर्ति है, जिसके परिणामस्वरूप इन सकारात्मक प्रभावों की अभिव्यक्ति में मध्यम कमी आएगी।

गुरू मिथुन राशि में 5 months and 3 days तक रहेगा गुरू वर्तमान राशि में वक्री नहीं होगा।

गुरू का अगला गोचर October 18, 2025 को होगा जब गुरू कर्क राशि में चला जाएगा।

गुरू का 12 भाव से गोचर प्रतिकूल परिणाम देता है, जो राशि के मध्य बिंदु पर सबसे खराब स्थिति में पहुंचता है। चूँकि गुरू आपके लिए रजत मूर्ति है, इसलिए नकारात्मक प्रभाव थोड़े बढ़ जाएँगे ।

बृहस्पति कर्क राशि में।

गोचर चार्ट

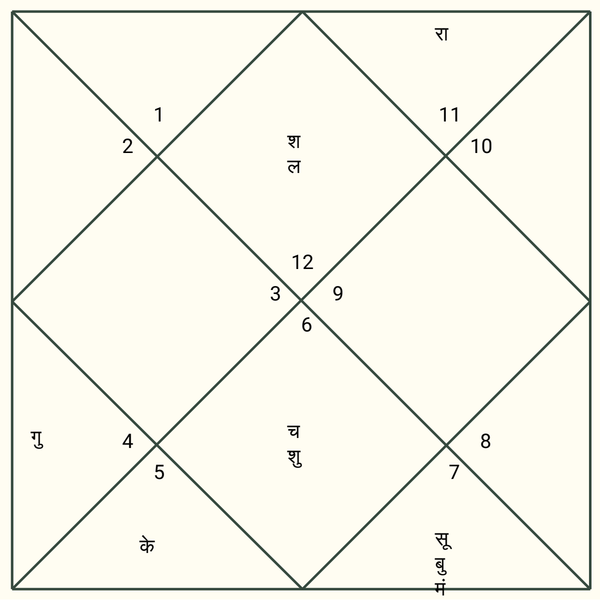

गुरू October 18, 2025 से December 05, 2025 तक कर्क राशि में गोचर कर रहा है। यह गोचर आपकी जन्म राशि कर्क से गिने जाने वाले पहले भाव से होकर गुजरेगा। गुरू आपके लिए रजत मूर्ति है, जिसके परिणामस्वरूप इन सकारात्मक प्रभावों की अभिव्यक्ति में मध्यम कमी आएगी।

गुरू कर्क राशि में 1 month and 16 days तक रहेगा और एक बार वक्री होगा। वक्री होना November 11, 2025 से शुरू होगा और March 11, 2026 को कर्क राशि में समाप्त होगा, जो 3 months and 27 days तक चलेगा।

गुरू का अगला गोचर December 05, 2025 को होगा जब गुरू मिथुन राशि में चला जाएगा।

गुरू का 1 भाव से गोचर प्रतिकूल परिणाम देता है, जो राशि के मध्य बिंदु पर सबसे खराब स्थिति में पहुंचता है। चूँकि गुरू आपके लिए रजत मूर्ति है, इसलिए नकारात्मक प्रभाव थोड़े बढ़ जाएँगे ।

गोचर फल

बृहस्पति, अन्य ग्रहों से अलग, 7वें भाव के अलावा 5वें और 9वें भाव पर भी अपना विशेष प्रभाव डालता है। नीचे लग्न और जन्म राशि के आधार पर बृहस्पति के गोचर की भविष्यवाणियाँ दी गई हैं।

बृहस्पति मिथुन राशि में।

मीन लग्न वालों के लिए, गुरु का चतुर्थ भाव, जिसे सुख भाव भी कहा जाता है से गोचर, जातक के जीवन में कई सकारात्मक बदलाव लेकर आता है। चतुर्थ भाव मिथुन राशि में स्थित है, जो बुध द्वारा शासित है और गुरु का मित्र ग्रह है, जो इन परिवर्तनों के लिए शुभ संकेत है। यह युति माता के स्वास्थ्य में मजबूती, भूमि एवं संपत्ति की प्राप्ति तथा घर-परिवार में सुख-शांति का संकेत देती है। इस अवधि के दौरान व्यक्ति का प्रभाव व ऊर्जा बढ़ेगी तथा वे अपने परिवार के लिए सुख-सुविधाओं की वस्तुएं प्रदान करने में सक्षम होंगे।

पंचम दृष्टि: तुला राशि के अष्टम भाव अर्थात आयुर भाव जो गुरु के शत्रु ग्रह शुक्र द्वारा शासित है, पर गुरु दृष्टि के कारण, जातक व्यक्ति की ऊर्जा और जीवन शक्ति में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त, वे प्राचीन ग्रंथों, पुरातत्व विज्ञान या गूढ़ विद्याओं का अध्ययन करने से लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

सातवीं दृष्टि: गुरु की दशम भाव अर्थात कर्म भाव, जो धनु राशि का मूल भाव है पर दृष्टि के कारण, व्यक्ति को अपने पिता तथा पिता समान व्यक्तियों से सहयोग प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त वे सरकारी अधिकारियों के बीच सम्मान अर्जित कर सकते हैं व अपने रोजगार अथवा व्यवसाय से खुशी प्राप्त कर सकते हैं।

नौवीं दृष्टि: शनि द्वारा शासित कुंभ राशि के प्रथम भाव अर्थात तनु भाव पर गुरु की दृष्टि के कारण, इस अवधि के दौरान जातक की खर्च करने की प्रवृत्ति बढ़ सकती है, और वे कई बार ऐसे उद्देश्यों पर खर्च कर सकते हैं, जो उन्हें अधिक पसंद नहीं होंगे। इसके अलावा, विदेशों से जुड़े संपर्क बन सकते हैं, लेकिन उनमें विशेष रुचि या उत्साह की कमी हो सकती है।

बृहस्पति आपकी जन्म राशि से बारहवें घर में गोचर कर रहा है

चंद्र राशि के बारहवें भाव में गुरु का गोचर होने के दौरान, जातकों को उनके जीवन के विभिन्न चरणों को प्रभावित करने वाली चुनौतियों और विपरीत परिस्थितियों की एक श्रृंखला का सामना करना पड़ सकता है। इस समयावधि को दुःख एवं अनिश्चिंतता प्रकट करने वाली स्थिति के रूप में बताया गया है। इस समयावधि में ऐसा हो सकता है कि जातकों से संबंधित किसी व्यक्ति का स्थान परिवर्तन बाध्य करके किया जा सकता है या किसी व्यक्ति को अपने परिजनों से दूर जाना पड़ सकता है। इस समयावधि की विशेषताओं में कठिनाइयां, दुःख, थकाने वाली यात्राएं आदि शामिल हैं और इससे जातकों के धन की हानि और धन के व्यय में वृद्धि होगी। इस समयावधि में, ख़राब स्वास्थ्य की वजह से चिंता बढ़ सकती है। साथ ही, सामाजिक प्रतिष्ठा और रोजगार की स्थिति में गिरावट आ सकती है और इस वजह से जातकों को गरीबी का सामना करना पड़ सकता है और उसकी आर्थिक समस्याएं बढ़ सकती है। इस गोचर के दौरान होने वाले संपत्ति के नुकसान एवं धन की हानि की वजह से जातकों की चुनौतियां और अधिक बढ़ सकती है। इस समयावधि में जातक स्वयं को असाध्य बीमारियों एवं घाव (ग्रंथी) आदि से संघर्ष करता हुआ पा सकता है और जातकों को अनचाहे शत्रुओं का भी सामना करना पड़ सकता है। इस स्थिति से जातकों में डर और संकोच का भाव बढ़ सकता है। इस अवधी के दौरान होने वाली यात्राओं में मिलने वाले कष्ट एवं समस्याएं जातकों के संघर्ष और प्रतिकूलता के समग्र भाव को दर्शाता है। इन समस्याओं के बावजूद भी इस चुनौतीपूर्ण समय से पार पाने के लिए जातकों में दृढ़ता और धैर्य का होना जरुरी है। हालांकि, इस समयावधि के कुछ शुभ फल भी हैं जिसमें विदेश से संबंधित मसलों में भाग्य चमक सकता है और जातकों को दूर देश से अवसर और प्राप्त हो सकता है। इसके साथ-साथ, जातकों द्वारा आत्मसुधार करने अथवा अपने में बदलाव लाने की कोशिश में अकेले रहने के प्रयत्न किए जा सकते हैं जिससे आत्मावलोकन और व्यक्तिगत विकास का होना संभव हो सकता है।

राशि के माध्यम से ग्रहों का पारगमन अनुकूल और प्रतिकूल दोनों तरह के परिणाम देता है, जो व्यक्ति की जन्म राशि (जन्म चंद्र राशि) के सापेक्ष उसके घर की स्थिति पर निर्भर करता है, जहां पारगमन होता है। कभी-कभी, ये सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव जन्म राशि के सापेक्ष विशेष घरों में अन्य पारगमन ग्रहों की स्थिति से समाप्त हो जाते हैं। जब किसी पारगमन ग्रह के सकारात्मक प्रभाव निष्प्रभावी हो जाते हैं, तो उसे गोचर वेध कहते हैं, और इसी तरह, जब गोचर ग्रह से उत्पन्न होने वाले नकारात्मक प्रभाव निष्प्रभावी हो जाते हैं, तो उसे विपरीत वेध कहा जाता है।

नकारात्मक गुरू के बारहवे भाव से गोचर के प्रत्याशित बुध, शुक्र, मंगल, और केतु प्रभाव आपके जन्म राशि कर्क के सापेक्ष दूसरे भाव से एक साथ गोचर करने के कारण निष्प्रभावी हो जाते हैं, जो गुरू के लिए 'वेध स्थान' के रूप में कार्य करता है। प्रतिकूल परिणामों के इस निरस्तीकरण को 'विप्रीत वेध' कहा जाता है। बुध, शुक्र, मंगल, और केतु के पारगमन की विशिष्ट अवधि जिसके परिणामस्वरूप अलाभकारी प्रभाव समाप्त हो जाते हैं, नीचे दिए गए हैं:

கிரகங்கள்	शुरुआत	समापन	अवधि
बुध	Aug 30, 2025	Sep 15, 2025	15 days
शुक्र	Sep 15, 2025	Oct 09, 2025	24 days
मंगल	Jun 07, 2025	Jul 28, 2025	1 month and 21 days

केतु	May 18, 2025	Oct 18, 2025	4 months and 29 days

ऊपर ग्रहों के लिए वेध काल का उल्लेख किया गया है, जिसमें सूर्य और चंद्र शामिल नहीं हैं। सूर्य और चंद्रमा के लिए वेध काल रिपोर्ट के अंत में दिए गए हैं।.

बृहस्पति कर्क राशि में।

मीन राशि के जातकों के लिए गुरु का यह गोचर जन्म कुंडली के पंचम भाव अर्थात संतान भाव, कर्क राशि में होगा, जो चंद्रमा की मित्र राशि है। यह उन्नति रचनात्मक और बौद्धिक प्रयासों में असाधारण उन्नति प्रदान करता है। जातक प्रभावशाली और मधुर वाणी से सम्मान और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा। इस अवधि में संतान सुख और पितृ सहयोग प्राप्त होगा। व्यक्ति की महत्वाकांक्षाएं उसे करियर के क्षेत्र में विकास और व्यावसायिक सफलता की ओर प्रेरित करेंगी।

पाँचवीं दृष्टि: मंगल द्वारा शासित वृश्चिक राशि में नवम भाव अर्थात भाग्य और धर्म भाव पर गुरु की दृष्टि जातक को असाधारण रूप से भाग्यशाली बनाती है। जातक धार्मिक मूल्यों का पालन करेगा तथा धार्मिक व आध्यात्मिक गतिविधियों में सक्रिय रहेगा।

सातवीं दृष्टि: शत्रु शनि द्वारा शासित मकर राशि के ग्यारहवें भाव जिसे लाभ भाव भी कहा जाता है पर गुरु की दृष्टि, आय से सम्बन्धित मामलों में कुछ परेशानियाँ उत्पन्न कर सकती है। इसलिए, जातक को ऐसे मामलों में निर्णय लेते समय सतर्क रहना चाहिए ताकि किसी भी तरह की परेशानी से बचा जा सके तथा वित्तीय जीवन में कोई अस्थिरता न आए।

नौवीं दृष्टि: मीन राशि में स्थित प्रथम भाव यानि तनु भाव पर गुरु की दृष्टि, आकर्षक व्यक्तित्व, उत्तम स्वास्थ्य, आत्मविश्वास और प्रभावशाली उपस्थिति प्रदान करती है। व्यक्ति समाज में सम्मानित होगा व लोगों पर प्रभाव डालेगा।

बृहस्पति, जो एक राशि से होकर गुजरने में लगभग एक वर्ष का समय लेता है, पूरे वर्ष में लगातार कुंडली में एक जैसा प्रभाव नहीं डालता है। एक राशि में नक्षत्रों के ढाई भाग होते हैं, और बृहस्पति विभिन्न अंतरालों पर इन नक्षत्रों से होकर गुजरता है, जिससे बृहस्पति के पारगमन के प्रभावों में उतार-चढ़ाव होता है। इसके अलावा, अष्टकवर्ग अवधारणा के अनुसार, प्रत्येक राशि को शनि, बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चंद्रमा और लग्न के क्रम में सात ग्रहों और लग्न के अनुरूप आठ कक्षों में विभाजित किया गया है। इसके अतिरिक्त, प्रतिगामी प्रभाव, गोचर वेध या विपरीत वेध और नक्षत्र वेध भी पारगमन ग्रह द्वारा प्रदान किए गए परिणामों को प्रभावित करने में भूमिका निभाते हैं। बृहस्पति के पारगमन के संबंध में उपरोक्त जानकारी के लिए नीचे भविष्यवाणियां और संबंधित तिथियां दी गई हैं:

बृहस्पति आपकी जन्म राशि से पहले भाव में गोचर कर रहा है

चंद्र राशि से प्रथम स्थानमें बृहस्पति के स्थानांतरण के दौरान, जातकों को लगातार चुनौतियों और असफ़लताओं का सामना करना पड़ सकता है। नियमित होते झगड़ों और नौकरी छूट जाने के साथ-साथ धन-संपत्ति, विवेक और सामाजिक छवि में ह्रास का जोखिम भी बना हुआ है। इस अवधि के दौरान मुश्किलें, बढ़े हुए खर्च और चिड़चिड़ाहट का अनुभव भी हो सकता है जो स्वयं जातक को ही नहीं बल्कि संबंधित अन्य लोगों को भी प्रभावित करेगा। जातक का सम्मान और प्रतिष्ठा भी दाव पर लग सकती है जिससे चिंता और घरेलू उथल-पुथल हो सकती है। इस दौरान यात्राएं भी थकाऊ और कठिन बन सकती हैं और दुश्मनों की संख्या भी बढ़ सकती है। आर्थिक तनाव, स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं और किसी भी कार्य में होने वाली देरी से परिस्थितियां गंभीर बन सकती हैं। जातक को तिरस्कार, परिजनों से विरोध और अधिकारियों से उपेक्षा का अनुभव हो सकता है। किसी भी अवांछित स्थान में आए ट्रांसफ़र से असहजता का भाव और अधिक गहरा सकता है जिससे उदासीनता और सरकारी हस्तक्षेप के कारण विपत्तियां बढ़ सकती हैं।

हालांकि, ऐसी चुनौतियों के बीच विकास और वृद्धि के अवसर भी मौजूद हैं। जातक पाएंगे कि वे आध्यात्मिक क्रियाओं के अलावा संपत्ति प्रबंधन, महिला शिक्षा, यौन संबंधी विषयों और चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में भी ज्ञान वर्धन का रुझान अनुभव कर रहे हैं। जातकों की इन विषयों में जागृत नई रुचि के कारण उनकी पूरे उत्साह के साथ इनमें भागीदारी रहेगी। जब कि जातक की यात्रा मुश्किल हो सकती है लेकिन इसमें उनके लिए व्यक्तिगत विकास और रूपांतरण के पर्याप्त अवसर हैं।

इस गोचर के दौरान, बृहस्पति पर किसी अन्य ग्रह से गोचर वेध या विपरीत वेध का प्रभाव नहीं पड़ता है।

गुरू के विभिन्न कक्षों से पारगमन

प्रत्येक ग्रह एक विशिष्ट अवधि के लिए एक राशि से होकर गुजरता है। चिन्ह को आठ बराबर खंडों में विभाजित किया गया है, जिन्हें काक्ष्य कहा जाता है। प्रत्येक कक्ष एक विशिष्ट ग्रह के आधिपत्य में शासित होता है, इस क्रम में शनि, बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चंद्रमा और अंत में लग्न क्रम से शासन करता है।

गुरू के भिन्नाष्टकवर्ग में, मिथुन राशि के 6 अंक हैं। ये 6 अंक बुध, शुक्र, मंगल, गुरू, शनि, और लग्न द्वारा योगदान किए गए हैं।

चूंकि बृहस्पति 2025 में कर्क राशि में गोचर के दौरान केवल पहली कक्ष्या, अर्थात शनि की कक्ष्या से ही गोचर करेगा, इसलिए बृहस्पति के कर्क राशि गोचर के लिए प्रदान की गई कक्ष्या भविष्यवाणियाँ और तिथियाँ केवल शनि की कक्ष्या पर आधारित हैं।

मिथुन: <p>जब गुरू बुध, शुक्र, मंगल, गुरू, शनि, और लग्न द्वारा शासित कक्ष से होकर गुजरता है, तो यह मिथुन राशि में 12th भाव से संबंधित अधिकतम परिणाम प्रकट करता है।</p>

कर्क: चूंकि शनि की कक्ष्या से बृहस्पति के गोचर के दौरान कोई बिंदु उपस्थित नहीं है, इसलिए इस अवधि में कुछ प्रतिकूल प्रभाव अनुभव हो सकते हैं।

अष्टकवर्ग में बिंदुओं के कक्ष से होने वाले बृहस्पति के स्थानांतरण के दौरान, जातक अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन की उम्मीद कर सकते हैं। जातक अपनी संपत्ति, खुशहाली और दाम्पत्य जीवन में सुधार अनुभव कर सकते हैं। इस परिवर्तन से उनके सामाजिक स्तर में भी वृद्धि हो सकती है और उन्हें सम्मान, उत्साह और संपूर्ण समृद्धि प्राप्त हो सकती है। इस अवधि में जातक पाएंगे कि वे विलासितापूर्ण वस्त्र और सोना ग्रहण कर रहे हैं। ये लोग अपने मानसिक स्वास्थ्य में भी उल्लेखनीय सुधार अनुभव करेंगे जिससे उन्हें आंतरिक शांति और संतोष प्राप्त होगा। साथ ही, अपने विरोधियों और समस्याओं पर विजय पाने के लिए यह अवधि बहुत अनुकूल है। साथ ही, इतने अनुकूल कक्ष से बृहस्पति का स्थानांतरण जीवन में वैभव, खुशहाली और उन्नति की अवधि है।

मिथुन: जब गुरू सूर्य और चंद्र द्वारा शासित कक्ष से होकर गुजरता है, तो यह मिथुन राशि में 12th भाव से संबंधित परिणामों का केवल एक हिस्सा ही सामने लाता है।

कर्क: जब बृहस्पति शनि की कक्ष्या से गोचर करता है, तो वह कर्क राशि में 1st भाव से संबंधित फल सीमित मात्रा में प्रदान करता है।

बिंदु से रहित कक्ष से होने वाले बृहस्पति के स्थानांतरण के दौरान, जातक स्वयं को विपत्तियों में घिरा पा सकते हैं जहां वे संपदा और विवेक में ह्रास का अनुभव करेंगे। विशेष रूप से वित्तीय मामलों से संबंधित यह ह्रास मानसिक तनाव का कारण बन सकता है। साथ ही, वाणी के कारण लड़ाई और अपमान हो सकते हैं जिससे जातक की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। उन्हें अपने विरोधियों से भी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। जातक फ़िज़ूलखर्च में भी संलग्न हो सकते हैं जिससे उनकी वित्तीय समस्याएं गंभीर हो सकती हैं। अपनी परिस्थितियों को सुधारने के लिए किए जाने वाले प्रयासों के बावजूद वे पाएंगे कि उनके प्रयास निष्फल हो रहे हैं जिसके कारण वे शर्मिंदगी और गलत आरोपों का शिकार बनेंगे।

बृहस्पति मिथुन राशि में।

गुरू के भिन्नाष्टकवर्ग में, मिथुन राशि के 6 अंक हैं। ये 6 अंक बुध, शुक्र, मंगल, गुरू, शनि, और लग्न द्वारा योगदान किए गए हैं।

छह बिंदुओं वाली राशि से होकर गुजरने वाले इस स्थानांतरण के दौरान, जातक किसी नए वाहन का स्वामित्व प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। ग्रहों की यह दशा जातक के लिए न सिर्फ़ आर्थिक विकास के अवसर लाएगी बल्कि उसकी भौतिक संपदा को बढ़ाने वाले अमूल्य धन जैसे सोने की आमद की ओर भी इशारा करती है। इसके अलावा, इस अवधि के दौरान, जातक वाहन की सुविधा का आनंद ले सकते हैं जिससे दैनिक जीवन में आवागमन संबंधी आराम और सुकून का अनुभव होगा। इतना ही नहीं, जातक देखेंगे कि उन्हें नए वस्त्र, गहने और मेकअप सामग्री की प्राप्ति हो रही है। इन सबसे न सिर्फ़ उनके बाहरी रूप रंग में सुधार होगा बल्कि स्टाइल को लेकर उनकी समझ और स्व-अभिव्यक्ति में भी वृद्धि होगी जिसकी सहायता से वे आत्मविश्वास के साथ अपने विशिष्ट व्यक्तित्त्व और पसंद को व्यक्त कर सकेंगे।

पहले काक्ष्य

बिंदुओं की उपस्थिति के कारण शनि के कक्ष से होने वाला बृहस्पति का स्थानांतरण सकारात्मक होगा। जातक बड़ी उपलब्धियों के लिए सामर्थ्य का प्रदर्शन करेंगे और अपने जीवन में पूर्णता का अनुभव करेंगे। वे अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक प्रयासों में सफ़लता अर्जित कर सकेंगे जिससे उन्हें अपार सुख और संतोष का अनुभव होगा। जातक साहित्य में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। यह स्थानांतरण संभव है कुछ अनुकूल परिस्थितियां और अवसर लाएगा जो जातकों के लिए उनकी शक्तियां और क्षमता प्रदर्शित करने का भी अवसर होगा। यह वह समय है जब ज़मीन खरीदना उचित होगा साथ ही कर्मचारियों के प्रयासों से लाभ अर्जित होगा। समग्र रूप में, ऐसा लगता है कि यह स्थानांतरण विशेष रूप से पक्के इरादे और कठिन परिश्रम के कारण सकारात्मकता और विकास की अवधि हो सकती है।

शनि के पहले कक्ष से होकर गुरू के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
14-May-2025	01-Jun-2025

दूसरे काक्ष्य

चूंकि इस दशा में बृहस्पति के कक्ष से बृहस्पति के स्थानांतरण के दौरान बिंदुओं की उपस्थिति है, जातकों को उनके घरेलू जीवन में प्रसन्नता और संतोष में वृद्धि का अनुभव होगा। उनके परिजनों के साथ संबंधों में सुधार हो सकते हैं, साथ ही उन्हें व्यक्तिगत जीवन में पूर्णता का अनुभव कराने वाला एक शांतिपूर्ण और सौहार्द से भरा पारिवारिक वातावरण प्राप्त होगा। विभिन्न विषयों में ज्ञान प्राप्त करने की भूख के साथ एक जातक धर्म के सिद्धांतों के अनुपालन और उन्हें समझने में वास्तविक रुचि प्रदर्शित करेगा। साथ ही, जातक को अनुकूल नीतियों, वित्तीय सहायता या अन्य प्रकार के सहयोग के रूप में सरकार से लाभ प्राप्त हो सकते हैं। इससे उनकी संपत्ति और वित्तीय स्थिरता में बढ़त होगी। इसके अलावा, जातक की ख्याति और सौभाग्य में भी वृद्धि होगी। इन लोगों को शिक्षकों और गुरुओं से आशीर्वाद भी प्राप्त हों सकते हैं।

गुरू के दूसरे कक्ष से होकर गुरू के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
01-Jun-2025	17-Jun-2025

तीसरे काक्ष्य

बिंदुओं की उपस्थिति में मंगल के कक्ष से गुरु का गोचर करना संबंधित जातकों के लिए महत्त्वपूर्ण सकारात्मक फल प्रदान करने वाला होता है. जातकों को कई तरह के शुभ लाभों का फल अपने कठिन परिश्रम और दोस्तों या सामान सोच रखने वाले लोगों के साथ सहयोग प्राप्त होने से मिल सकता है. इन शुभ फलों में जातकों को अपने व्यक्तिगत प्रयास से करियर में पदोन्नति मिलने या आगे बढ़ने की संभावना बन सकती है जिसे जातक द्वारा किए जाने वाले समर्पण का फल प्राप्त होना कह सकते हैं. जातकों का उत्साह मजबूत होने से लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में प्रेरणा मिल सकती है. इसके अतिरिक्त, नैतिक एवं इमानदारी भरे जीवन जीने की प्रतिबद्धता यह दर्शाता है कि जातकों में सद्गुणों वाले कार्यों एवं नैतिक आचरण के प्रति झुकाव बढ़ सकता है. सकारात्मक अवसरों के बढ़ने एवं सुफल प्राप्त होने की संभावना इमानदारी को प्राथमिकता देने की वजह से बढ सकती है.

मंगल के तीसरे कक्ष से होकर गुरू के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
17-Jun-2025	04-Jul-2025

चौथे काक्ष्य

बिंदुओं के अभाव में सूर्य के कक्ष से बृहस्पति के स्थानांतरण के दौरान जातकों को कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे लोगों को सरकारी कार्रवाइयों के कारण कुछ वित्तीय नुकसान का भी अनुभव हो सकता है जो काफ़ी चुनौतीपूर्ण होगा। इसके साथ ही, सरकारी कर्मचारियों से विरोध होने पर तनाव भी बढ़ सकता है।

मित्रों के साथ संबंधों में भी तनाव आ सकते हैं जिससे रिश्तों में कड़वाहट आ सकती है। ऐसे में वित्तीय स्थितियां चुनौतियों को और बढ़ा सकती हैं जिससे पैसे से जुड़ी समस्याएं गंभीर हो सकती हैं।

स्वास्थ्य समस्याएं जैसे पाचन संबंधी रोग के अलावा हृदय और सिर से जुड़ी बीमारियां भी हो सकती हैं जिससे असुविधा हो सकती है। इसके अलावा, बच्चे से दूरी और गर्भपात की भावनात्मक जटिलताओं के कारण वेदनाओं का बोझ बढ़ सकता है।

सूर्य के चौथे कक्ष से होकर गुरू के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
04-Jul-2025	20-Jul-2025

पांचवे काक्ष्य

शुक्र के कक्ष में बृहस्पति की यात्रा के दौरान जातकों को बिंदुओं की उपस्थिति के कारण सकारात्मक परिणाम भी मिल सकते हैं। ऐसे व्यक्तियों को अनुभवी शिक्षकों से बहुमूल्य शिक्षा और सहायता प्राप्त हो सकती है जिससे विशेष रूप से कानून के संबंध में उनके ज्ञान में विस्तार हो सकता है। जातकों को यह सुझाव दिया जाता है कि वे इस समय में सच्चे आचरण करें जिससे उन्हें गुणी महिलाओं से लाभ के साथ कई अन्य फ़ायदे भी होंगे।

इसके अलावा, इस अवधि में परामर्श और सुझाव का योग भी प्रबल है जिससे जातक को उचित निर्णय लेने में मदद मिलेगी। ऐसा भी हो सकता है कि इस समय एक बच्चे के जन्म जैसी जीवन की कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाएं घटें। अति कुशल और शिक्षित लोगों के साथ भी संपर्क बन सकते हैं जिससे जातक को व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होगा।

ग्रह की इस यात्रा के दौरान वाहन जैसी परिसंपत्तियों को अर्जित करने का भी योग है जिससे आवागमन में सुगमता होगी।

शुक्र के पांचवे कक्ष से होकर गुरू के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
20-Jul-2025	07-Aug-2025

छटे काक्ष्य

जैसे ही बृहस्पति बुध की कक्षा से गुज़रेगा, जातक लाभकारी प्रभावों के बारे में पहले से सोच सकते हैं क्योंकि बिंदु उपस्थित हैं। अनेक प्रकार की जानकारी और विज्ञान संबंधी पूछताछ में इस समय जातक दिलचस्पी और जोश दिखाएंगे। अक्सर अपने आस-पास के वातावरण को समझने का उत्साह धन और सम्पूर्ण खुशहाली में वृद्धि करता है। इसके अतिरिक्त सीखने और ज्ञान अर्जित करने में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है, जिससे व्यक्तिगत विकास होता है। इसके अलावा इस अवधि में लोगों में शारीरिक सुख के लिए बहुत अधिक आदर उनके सम्पूर्ण स्वास्थ्य में सुधार कर सकता है। इसके अलावा जो लोग अलग-अलग क्षेत्रों में व्यापक जानकारी रखते हैं वे अपनी विशेष जानकारी का प्रदर्शन करके सलाह और मार्गदर्शन देने का अधिकार पा सकते हैं। जो आदर शिक्षकों और गुरुओं से मिलने वाला आदर उनकी रुचि से संबंधित क्षेत्रों में सीखने और योगदान देने के लिए उनके समर्पण को पहले से ज़्यादा विधिमान्य बनाता है।

बुध के छटे कक्ष से होकर गुरू के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
07-Aug-2025	25-Aug-2025
07-Feb-2026 ℞	12-Apr-2026

सातवे काक्ष्य

चंद्रमा के कक्ष से बिंदुओं की अनुपस्थिति में गुरु का गोचर संबंधित जातकों के जीवन में आने वाली विभिन्न समस्याओं के बारे में बताता है। इस स्थिति में, जातकों को धन की हानि हो सकती है, दोस्त-मित्रों के साथ संबंधों में मनमुटाव या विरोध का सामना करना पड़ सकता है और इसकी वजह से रिश्तों में दरार भी पड़ सकती है। इसके अतिरिक्त, जातकों को क्रोध और मानसिक अशांति का अनुभव, भावनात्मक विछोह का सामना करना पड़ सकता है और यह सब व्यवधान को बढाने का कारण बन सकते हैं। इसके अतिरिक्त, दुखदाई समय और कठिनाइयों की वजह से मानसिक संतुलन को बनाए रखने में भी दिक्कतें आ सकती हैं। इसके अलावा, जीवन में ऐसे भी मसले देखने को मिल सकते हैं जिसमें किसी सामान्य व्यक्ति की राय या उसके कार्य-कलाप की वजह से जातकों की संपत्ति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है और यह सब उसके तनाव और अनिश्चिंतता को बढाने का कारण बन सकता है।

चंद्र के सातवे कक्ष से होकर गुरू के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
25-Aug-2025	16-Sep-2025
07-Jan-2026 ℞	07-Feb-2026
12-Apr-2026	11-May-2026

आठवे काक्ष्य

लग्न की कक्षा से बिंदुओं की उपस्थिति में गुरु का गोचर करना संबंधित जातकों के लिए कई सकारात्मक सुफल प्रदान करने वाला होता है. इस समयावधि में संबंधित जातकों में सद्‌गुण वाले व्यवहार दिख सकते हैं जो इमानदारी और नैतिक क्षमता की भावना को बढ़ावा दे सकते हैं. जातकों में दिखने वाली धार्मिक प्रतिबद्धता प्रायः उत्कृष्ट स्वास्थ्य से संबंधित होती है और यह समग्र कल्याण एवं जीवन शक्ति में योगदान देने वाली होती है. इसके अतिरिक्त, जातकों को प्राप्त होने वाले सामयुदायिक सम्मान और प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होती है और यह जातकों के बढ़ते सम्मान का संकेत देता है. इस अवधि के दौरान जातकों को सरकारी अधिकारियों का भी सहयोग प्राप्त हो सकता है जिससे विकास एवं सफलता के अवसर और बढ़ सकते हैं. इसके अतिरिक्त, संबंधित जातकों की रूचि धार्मिक लेखन में एवं पवित्र ग्रंथों के बारे में अधिक से अधिक जानने के प्रति बढ़ सकती है. इससे जातकों के व्यक्तिगत एवं आध्यात्मिक विकास में सहायता मिलेगी. ऐसे संकेत मिलते हैं कि इस प्रकार के ज्ञान से मिलने वाली संतुष्टि ख़ुशी के साथ मिलकर और बढ़ जाएगी. इसके साथ-साथ अध्ययन-अध्यापन से महत्त्वपूर्ण लाभ प्राप्त होगा क्योंकि ज्ञान का आदान-प्रदान व्यक्तिगत विकास एवं सामाजिक विकास को बढ़ावा देता है.

लग्न के आठवे कक्ष से होकर गुरू के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
16-Sep-2025	18-Oct-2025
05-Dec-2025 ℞	07-Jan-2026
11-May-2026	02-Jun-2026

बृहस्पति कर्क राशि में।

गुरु की भिन्नष्टकवर्ग में, कर्क राशि को शनि से कोई बिंदु प्राप्त नहीं हो रहा है।

तीन बिंदुओं वाली राशि से बृहस्पति के स्थानांतरण के दौरान, जातकों को मानसिक तनाव और विषाद का अनुभव हो सकता है। इसके अलावा, संभव है कि जातक को कान से संबंधित समस्याएं भी अनुभव हों जो दर्शाता है कि व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य और देखभाल की ओर ध्यान देने की ज़रूरत है। इस अवधि में स्फूर्ति में भी कमी आ सकती है इसलिए स्वयं की देखभाल और उत्साही अनुभव करने के लिए सतर्क होने की आवश्यकता है। इस अवधि में वित्तीय चुनौतियां भी आ सकती हैं जिससे जीवनयापन की सामान्य व्यवस्था में अस्थिरता आ सकती है। जबकि इस दौरान कुछ कठिनाइयों का अनुभव हो सकता है, यह व्यक्तिगत विकास और अध्ययन के लिए अवसर भी उपस्थित करता है जो भविष्य की चुनौतियों के लिए जातक को तन्यक और दृढ़ बनाएगा।

पहले काक्ष्य

चूंकि, कक्षा बिंदु रहित है, इसलिए शनि की कक्षा में बृहस्पति का गोचर चुनौतीपूर्ण हो सकता है. जिससे, इस समय में, व्यक्ति को उसकी लालची प्रवृत्ति अथवा अतिशय लाभ कमाने की इच्छा के कारण धन का नुकसान हो सकता और असफलता आदि का सामना करना पड़ सकता है. फलस्वरूप, व्यक्ति में क्षोभ और असंतोष की भावना प्रभावी हो सकती है। इसके अतिरिक्त, नकारात्मक कार्यों अथवा अनैतिक आचरण समस्याओं को बढ़ा सकते हैं और व्यक्ति की स्थिति और भी ख़राब हो सकती है। इसके साथ-साथ कर्मचारियों या नौकरों के व्यवहार से नुकसान हो सकता है। इसलिए, संबंधों में सामंजस्य बनाए रखने एवं प्रभावी तरीके से उसे व्यवस्थित करने पर ध्यान देना होगा. इस समय पर यह जरुरी है कि जातक अपने कार्यों का आत्मावलोकन करता रहे, अपने व्यवहार में संतुलन बनाए रखे और इमानदारी के साथ कोई भी निर्णय लेवें।

शनि के पहले कक्ष से होकर गुरू के गुजरने का समय नीचे दिया गया है।

शुरुआत	समापन
18-Oct-2025	05-Dec-2025

गुरू नक्षत्र में गोचर

12 राशियाँ 27 नक्षत्रों के सम्मिश्रण से बनी हैं। जब कोई ग्रह किसी राशि से होकर गुजरता है, तो वह लगभग ढाई नक्षत्रों से होकर गुजरता है। नीचे इन नक्षत्रों से बृहस्पति के पारगमन की भविष्यवाणियाँ और तिथियाँ प्रस्तुत हैं:

बृहस्पति मिथुन राशि में।

गुरू भरणी नक्षत्र में गोचर

गुरू का भरणी नक्षत्र में गोचर, जो मंगल द्वारा शासित है, जो मीन के पहले भाव में स्थित है। मित्र तारा होने के कारण, भरणी अच्छा प्रभाव उत्पन्न करता है।

गुरू का भरणी नक्षत्र में April 10, 2025 से June 13, 2025 तक गोचर

गुरू चित्रा नक्षत्र में गोचर

गुरू का चित्रा नक्षत्र में गोचर, जो राहु द्वारा शासित है, जो कर्क के पांचवे भाव में स्थित है। परम मैत्र तारा होने के कारण, चित्रा मध्यम प्रभाव उत्पन्न करता है।

गुरू का चित्रा नक्षत्र में June 13, 2025 से August 13, 2025 तक गोचर

गुरू धनिष्ठा नक्षत्र में गोचर

गुरू का धनिष्ठा नक्षत्र में गोचर, जो गुरू द्वारा शासित है, जो मेष के दूसरे भाव में स्थित है। जन्म तारा होने के कारण, धनिष्ठा मध्यम प्रभाव उत्पन्न करता है।

गुरू का धनिष्ठा नक्षत्र में August 13, 2025 से June 18, 2026 तक गोचर

व्याख्या

इस गोचर के दौरान संबंधित जातकों को कई पक्षों पर महत्त्वपूर्ण लाभ प्राप्त हो सकता है. जिससे उन्हें अपार खुशी एवं गहरी संतुष्टि का अनुभव हो सकता है. इसके साथ-साथ, जातकों द्वारा किए जाने वाले प्रयास सफल हो सकते हैं और उनका अपने संबंधित क्षेत्र में अधिकार बढ़ सकता है, उनको मान्यता प्राप्त हो सकती है और ये जातक अपने समुदाय के बीच में या अपने उद्योग क्षेत्र में अपनी स्थिति को मजबूत कर सकते हैं और अपने प्रभाव को बढ़ा सकते हैं.

इस गोचर के दौरान, जातक अपने जीवन के अलग अलग क्षेत्रों में वृद्धि अनुभव करेगा, जो इनको खुशी और संतुष्टि देने वाला होगा।। इसके अतिरिक्त, वो अपने लक्ष्यों को सफलतापूर्वक हासिल करेगा, सत्ता हासिल होगी और प्रख्यात होगा अपने क्षेत्र में। यह उसकी स्थिति को बल देगा और समाज और व्यवसाय में प्रभाव बढ़ेगा।

इस गोचर के दौरान ऐसी संभावना है कि जातकों को सरकारी संस्थाओं से प्रशंसा एवं प्रतिष्ठा मिल सकती है. जिससे जातक को लाभ एवं सफलता के थोड़े अवसर मिल सकते हैं. इस छोटी सी उपलब्धि मात्र से जातक को संतुष्टि मिलेगी और उसमें प्रोत्साहन की भावना बढ़ेगी और यह उसे आगे की तरफ प्रयास करने के लिए प्रेरित करेगी.

बृहस्पति कर्क राशि में।

गुरू धनिष्ठा नक्षत्र में गोचर

गुरू का धनिष्ठा नक्षत्र में गोचर, जो गुरू द्वारा शासित है, जो मेष के दूसरे भाव में स्थित है। जन्म तारा होने के कारण, धनिष्ठा मध्यम प्रभाव उत्पन्न करता है।

गुरू का धनिष्ठा नक्षत्र में August 13, 2025 से June 18, 2026 तक गोचर

व्याख्या

इस गोचर के दौरान ऐसी संभावना है कि जातकों को सरकारी संस्थाओं से प्रशंसा एवं प्रतिष्ठा मिल सकती है. जिससे जातक को लाभ एवं सफलता के थोड़े अवसर मिल सकते हैं. इस छोटी सी उपलब्धि मात्र से जातक को संतुष्टि मिलेगी और उसमें प्रोत्साहन की भावना बढ़ेगी और यह उसे आगे की तरफ प्रयास करने के लिए प्रेरित करेगी.

सूर्य और चंद्र के लिए वेध

मिथुन राशि के गोचर में गोचर वेध

जब गोचर ग्रह से उत्पन्न होने वाले नकारात्मक प्रभाव समाप्त हो जाते हैं, तो उसे विपरीत वेध कहते हैं। नीचे वे समय दिए गए हैं जब बृहस्पति के गोचर की अवधि के दौरान सूर्य और चंद्रमा विप्रीत वेध बनाते हैं। इन समयों के दौरान, बृहस्पति के हानिकारक प्रभाव कम हो जाएँगे।

सूर्य का विप्रीत वेध लगभग 30 दिनों तक चलता है। नीचे विशिष्ट अवधियाँ दी गई हैं।

शुरुआत	समापन
Aug 17, 2025	Sep 17, 2025

चंद्रमा का विप्रीत वेध आमतौर पर लगभग 2 दिनों तक चलता है। अवधि नीचे दी गई तालिका में सूचीबद्ध हैं।

शुरुआत	समापन
Jun 01, 2025	Jun 04, 2025
Jun 29, 2025	Jul 01, 2025
Jul 26, 2025	Jul 29, 2025
Aug 23, 2025	Aug 25, 2025
Sep 19, 2025	Sep 21, 2025
Oct 16, 2025	Oct 18, 2025

Disclaimer: All astrological calculations are based on vedic rules & scientific equations and not on any published almanac. Though all efforts have been made to ensure the accuracy of all published reports and calculations, we do not rule out the possibility of any unexpected errors. Therefore, Brand cannot be held responsible for the decisions that may be taken by anyone based on this report. Brand assumes no liability for any decisions made based on output from our calculations or reports. The reports or remedies should not be used as substitute for advice, programs, or treatment that you would normally receive from a licensed professional, such as a financial or legal advisor, doctor, psychiatrist etc. Information, forecasts, predictions, reports and remedies provided by Brand should be taken strictly as guidelines and suggestions.

ASTROICA.COM

www.astroica.com

+91 481 2970053

support@astroica.com